- ***GRAND TEST PAPER HINDI -04/03/2025 WEST GODAVARI***

SECTION -1

1. शीतल

2. चराते

3. 1886

4. में

5. तत्पुरुष समास

6.सु+आगत

7. प्रथम

8. अनु

9.इत

10. युवक की आवाज ठीक पहुँचा।

11. मैं इसी चट्टान पर प्रतीक्षा करूँगा

12. मैं ने पुस्तक पढी।

13)

1.नेक और मददगार व्यक्ति

2. निकोबारी लोग उसे बेहद प्रेम करते थे।

3. दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था।

4. तताँरा

5. तताँरा वामीरो कथा

14)

1. घुडसावरी

https://www.schools360.in/

2. गपशप करती हैं। कभी-कभी शैतानी में इसके भीतर भी घुस जाती है।

3. गौरैया कहती है कि- दरअसल कितनी भी बड़ी हो तो एक दिन उसका मुँह बंद होना

4. एक दिन तोप का मुँह बंद हो गया।

5. वीरेन डंगवाल

15)

1.(A)पर्वतों में

2.(B) नदिया

3.(A) समुद्र

4.(B) विशालसागर में

5.(A) नदियों का

16)

1.(C) स्वस्थ मस्तिष्क का

2.(D) करोना

3.(C) बेईमान

4.(D) मीडिया को

5.(B) करोना

17 अ)नाम : (कबीर) **जन्म : 1398 - काशी में**

मृत्यु : 1518 - मगहर में

गुरु : रामानंद

रचनाएँ : साखी, सबद

भाषा : सधुक्कडी, पंचमेल खिचडी

विशेषता : क्रांतदर्शी कवि, बाह्याडंबरों का खंडन

आ)मनुष्यता- मैथिली शरण गुप्त (कवि परिचय)

नाम : मैथिलीशरण गुप्त

जन्म : 1886 - चिरगाँव में

मृत्यु : 1964

रचनाएँ : साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध

विशेषता : राष्ट्रकवि, रामभक्त कवि

भाषा : खडीबोली

18). 1.नवलगढ़ 2. सीतराम सेक्सरिया 3. आजाद हिंद फौज।

4.1962

5. स्वाध्याय से

19)सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै ।

दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै ।।

20)पाठः मनुष्यता विधाः कविता

कवि : मैथिलीशरण गुप्त

कवि कहते हैं कि दूसरों के लिए जीवन बिताकर मरना ही सुमृत्यु है। अपने लिए जीना जीना नहीं है। समाज के लिए कुछ उपकार करना है। मरने के बाद भी उसको याद रखना चाहिए।

21)"सर हिमालय का हमने न झुकने दिया"- इस पंक्ति में हिमालय को हमारे देश के गौरव का प्रतीक कहा गया है। भले ही हमारे प्राण चले जाएँ, फिर भी हम अपने देश का गौरव ऊँचा ही रखें। चीन ने भारत की आन-बान-शान को चुनौती देते हुए हिमालय पर्वत की ओर से आक्रमण किया था। यह एक प्रकार से भारत के स्वाभिमान को चुनौती थी ।

22) ज. कानून भंग के काम को रोकने के लिए पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंसपेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल कीं तरफ़ से नोटिस निकाला गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

23)वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से इस प्रकार जवाब दिया कि "पहले बताओ ! तुम कौन हो? इस प्रकार मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण क्या है? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं ।"

24)सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का रह गया क्योंकि सवार और कोई दूसरा नहीं था बल्कि स्वयं वज़ीर अली था। उसी को पकड़ने के लिए कर्नल दल-बल के साथ वहाँ डेरा जमाए थे। वह कर्नल से दस कारतूस ले गया। साथ ही साथ यह भी कह गया कि वज़ीर अली को पकड़ना आसान नहीं है ।

25)अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका को दुनिया की बेहतर समझ है क्योंकि उन्होंने अपने भाइयों और महंत के व्यबहार के साथ - साथ घर की बहुओं के बदले हुए व्यबहार को भी झेला है। वे भली भाँति जानते हैं कि इन सबके बदले हुए व्यबहार के पीछे उनकी ज़मीन है। उन्हें हरिहर काका से नहीं बल्कि उनकी जमीन से प्यार है। वे जानते हैं कि अपने जीते जी यदि वे ज़मीन अपने भाइयों के नाम लिख देंगे तो उनके भाइयों का व्यवहार उनके प्रति बदल जाएगा। उन्हें यह बात अपने भाइयों और महंत दोनों के ही व्यवहार से समझ में आ गई थी। रमेसर की विधवा जब जायदाद दे चुकी थी, तब उसकी हालत क्या हुई ? इसके बारे में भी वे जान गए थे ।

26)लेखक के आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हँसी आने लगती थी। लेकिन खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते। इससे पता चलता है कि कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।

https://www.schools360.in/

Section -V

27) अ)पाठ का नाम : पद

विधा कविता

कवयित्री : मीराबाई

जीवनकाल : 1503-1546

मीराबाई श्री कृष्ण से विनती करती है किः-

हे श्री कृष्णा! आपने साड़ी बढ़ाकर द्रोपदी की लाज बचाई थी।

आप ही ने नरसिंह का अवतार में भक्त प्रहलाद को बचाया था।

हे प्रभु! इसी तरह मेरे दुखों को भी कम कीजिए।

श्री कृष्णा आप मुझे अपनी दासी बनाकर रख लीजिए।

आपकी लीलाओं को वृंदावन की गलियों में गाऊँगी।

मीरा श्री कृष्ण की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहती है कि -श्री कृष्णा पीले वस्त्र पहने हुए हैं।उनके सिर पर मोर का मुकुट है।गले में वैजयंती माला शोभायमान है।

हे प्रभु! मैं लाल साड़ी पहनकर आपका दर्शन करना चाहती हूँ।तुम आधी रात में यमुना नदी के किनारे दर्शन देने जरूर आना।

आ) पर्वत प्रदेश में पावस (कविता का सारांश)

पाठ का नाम : पर्वत प्रदेश में पाक्स

विधा: कविता

कवि: श्री सुमित्रानंदन पंत

जीवन काल : 1900 - 1977

* पावस ऋतु में हर पल प्रकृति में परिवर्तन होते रहते हैं।

* पर्वत हजारों पुष्प रूपी आँखों से तालाब में अपना महाकार प्रतिबिंब देख रहे हैं।

* झरने पर्वत के गौरख का गान कर रहे हैं।

* धरती पर मूसलधार वर्षा हो रहा है। इससे यह लग रहा है कि आसमान धरती पर टूट पड़ा होगा।

* तालाब पर धुआ छा गया हो।। यह लग रहा है कि तालाब में आग लग गई हो।

* वर्षा के इस भयंकर रूप को देखकर शाल वृक्ष भयभीत होकर धरती में धंस गए हैं।

28) अ) बडे भाई साहब " कहानी का सारांश लिखिए।

ज) पाठ का नामः बडे भाई साहब

विधा: कहानी

लेखक : श्री प्रेमचंद जी

जीवनकाल : 1880-1936

* बडे भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे।

* वे नौवीं कक्षा में पढ़ते थे।

* बडे भाई स्वभाव से बडे अध्ययनशील थे।

* हरदम किताब खोले बैठे रहते थे।

* छोटे भाई को पढाई के बजाय खेलना पसंद था।

* परीक्षाओं में छोटे भाई पास हुआ, मगर बडे भाई फेल हुआ।

* इसलिए छोटे भाई ने घमंड से खेलों में समय बरबाद किया।

* एक दिन बडे भाई ने उसको खेलते समय पकडा ।

* अपने माता-पिता और दादाजी के अनुभव ज्ञान के बारे में बताया।

* इससे छोटे भाई को अपनी लघुता मालूम हुई।

आ)झेन की देन पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ का नाम : गिन्नी का सोना

लेखक : श्री रवींद्र केलेकर

जीवन काल : 1925 - 2010

पाठ का सारांशः

- जापान में अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक रूप से बीमार हैं।
- क्योंकि उनकी दिमाग की रफ़्तार तेज होती है।
- वे एक महीने के काम एक ही दिन में पूरा करना चाहते हैं।
- इससे मानसिक तनाव बढ़ जाता है और मनोरुग्न बन जाते हैं।
- जापानी लोग शांत वातावरण में समय बिताने के लिए टी-सेरेमनी में जाते हैं।
- वहाँ केवल तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता है।
- कप में केवल दो घूंट चाय ही रहती है।
- इन दो घूंट को करीब डेढ़ घंटे तक चुस्कियाँ लेते हुए पीते हैं।
- इससे दिमाग की रफ़्तार कम होती हैं।• मन को शांति मिलती है।

29) स्थानः

दिनांकः

प्रेषक-

दसवी कक्षा,

जि.प. उ. पाठशाला,

सेवामें,

व्यवस्थापक जी,

https://www.schools360.in/

पुस्तक विक्रय विभाग, हिंदी प्रचार सभा,

हैदराबाद।

प्रिय महोदय,

निम्न लिखित पुस्तकें ऊपर दिये हुए मेरे पते पर वी.पी.पी. के द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करें।नियमानुसार 200/- रू अग्रिम भेज रहा हूँ। यथा नियम उचित कमीशन भी दीजिए।

(1) सरल हिंदी व्याकरण भाग3 प्रतियाँ

(2) हिंदी-तेलुगु कोश 6 प्रतियाँ

(3) हिंदी रचना भाग1 - 3 प्रतियाँ

कुल – 12 प्रतियाँ धन्यवाद ।

आपका / भवदीय,

पलकोल ,

दि.

प्रिय भाई,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। गर्मी की छुट्टियों में में दिल्ली देखने गया।

वहाँ तो सभी लोग हिंदी ही बोलते हैं। मुझे तो बड़ी खुशी हुई ।

हिंदी सुनने में और बोलने में बहुत अच्छी लगती है। यह हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा भी है। दिल्ली से लौट आने के बाद मुझे हिंदी सीखने की बड़ी इच्छा हुई। खासकर इसे सीखने से भाईचारे की भावना बढ़ती है।

इसलिए अब में हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाएँ लिखने की तैयारी कर रहा हूँ। अतः तुम भी हिंदी सीखने का प्रयत्न करो। माता-पिता को मेरे प्रणाम कहना।

https://www.schools360.in/

तुम्हारा प्रिय भाई,

पता:1-16-35/A,

गीता मंदिर,

लंकपल्ली,

प.गो. जिला।

30)

1) विद्यार्थी अनुशासन

आजकल समाज में जहाँ देखो वहाँ नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। देश के हर क्षेत्र में अर्थात् राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अन्याय, अत्याचार, आदि दिखायी दे रहे हैं। इन सबका एक मात्र कारण है नैतिक मूल्यों का पतन एवं ह्रास।

प्राचीन ज़माने में पाठशाला शिक्षा में विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी. लेकिन आजकल विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा का अभाव है। केवल यांत्रिक रूप से शिक्षा दी जा रही है। आजकल शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक प्राप्त करना ही है।

इसलिए विद्यार्थी जीवन में ही हर विद्यार्थी नैतिक शिक्षा को अपनाना चाहिए। सरकार को भी पाठशालाओं में नैतिक शिक्षा की प्रधानता देनी चाहिए। नैतिक शिक्षा से संबंधित पाठ्य प्रणाली बनानी चाहिए। हर सप्ताह में एक कालांश देकर नीति कहानियाँ और अनेक नैतिक विषयों को बनाना चाहिए। जिनसे विद्यार्थी उन्हें ग्रहण करके निज जीवन में भी नैतिक मूल्यों का पालन करेंगे। माँ बाप की सेवा करेंगे। अतिथियों और गुरुजनों का आदर करेंगे।

2)भूमिका : दीवाली हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है। मेरा प्रिय त्यौहार दीवाली है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, धनिक-गरीब सबके लिए यह प्रिय त्यौहार है। यह पर्व आश्विन अमावस्या को मनाया जाता है।

https://www.schools360.in/

दीवाली का अर्थ होता है दीपों की पंक्ति। यह वास्तव में पाँच त्यौहारों का समूह रूप है।

विषय : नरक चतुर्दशी के बारे में एक कथा प्रचलित है। प्राचीन काल में नरकासुर नामक एक राक्षस रहता था। वह बडा दुष्ट था। वह लोगों को बहुत सताता था। लोगों में त्राहि-त्राहि मच गयी। लोगों की प्रार्थना सुनकर भगवान श्री कृष्ण ने सत्यभामा के साथ नरकासुर पर आक्रमण किया। सत्यभामा ने नरकासुर को मार डाला। इस पर लोगों ने दीप जलाकर अपनी खुशियाँ प्रकट कीं।

विश्लेषण : दीवाली के संबंध में अनेक कथाएँ हैं। एक कथा इस प्रकार है "रावण वध के बाद जब राम अयोध्या लौटे तो पुरजनों ने उनके स्वागत में दीवाली का आयोजन किया"। यह बड़ा आनंददायक पर्व है। दीवाली के दिन लोग तडकें उठते हैं। अभ्यंगन स्नान करके नये कपडे पहनते हैं। शाम को दीपों की पूजा और लक्ष्मी की पूजा करते हैं। बच्चे पटाखें, फुलझडियाँ आदि जलाते हैं। लोग मिठाइयाँ खाते हैं। मारवाडी लोग इस दिन से नये साल का आरंभ मानते हैं। हिन्दु लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं। सभी मंदिर जाते हैं। खासकर व्यापारी लोग अपने पुराने हिसाब ठीक करके नये हिसाब शुरू करते हैं। यह खासकर हिन्दुओं का त्यौहार है। सफ़ाई का त्यौहार है। अन्धकार पर प्रकाश और पाप पर पुण्य की विजय साधना का त्यौहार है।

उपसंहार : यह त्यौहार भारत भर में मनाया जाता है। खासकर यह बच्चों का त्यौहार है। बच्चों के आनंद का ठिकाना नहीं होता है। दीवाली के दिन सर्वत्र प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देती है।

3) प्रस्तावना : पढ़ने के लिए जिस स्थान पर पुस्तकों का संग्रह होता है, उसे पुस्तकालय कहते हैं। भारत में मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नै, दिल्ली, हैदाराबाद आदि शहरों में अच्छे पुस्तकालय हैं। तंजाऊर का सरस्वती ग्रंथालय अत्यंत महत्व का है। मानव जीवन में पुस्तकालय का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

विषय विश्लेषण : पुस्तकालय चार प्रकार के हैं।

1) व्यक्तिगत पुस्तकालय

2) सार्वजनिक पुस्तकालय 3) शिक्षा- संस्थाओं के पुस्तकालय 4) चलते फिरते पुस्तकालय

पुस्तकों को पढ़ने की रुचि तथा खरीदने की शक्ति रखनेवाले व्यक्तिगत पुस्तकालयों का संचालन करते हैं। इतिहास, पुराण, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनचरित्र आदि सभी तरह के ग्रंथ सार्वजनिक पुस्तकालयों में मिलते हैं। इनमें सभी लोग अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ सकते हैं। नियत शुल्क देकर सदस्य होने पर पुस्तकें घर ले जा सकते हैं। शिक्षा संस्थाओं के पुस्तकालयों से केवल तत्संबंधी विद्यार्थी ही लाभ पा सकते हैं। देहातों तथा शहरों के विभिन्न प्रांतों के लोगों को पुस्तकें पहुँचाने में चलते फिरते पुस्तकालय बहुत सहायक हैं। इनके नियमित रूप से पढ़ने से मनोरंजन के साथ साथ ज्ञान विज्ञान की भी वृद्धि होती है।

पुस्तकें पढ़ने से ये लाभ हैं: इनके नियमित रूप से पढ़ने से मनोरंजन के साथ साथ ज्ञान विज्ञान की भी वृद्धि होती है। 1) अशिक्षा दूर होती है। 2) बुद्धि का विकास होता है। 3) कुभावनाएँ दूर होती है। विभिन्न देशों की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का परिचय मिलता है।

उपसंहार : पुस्तकालय हमारा सच्चा मित्र है। इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। इसलिए पुस्तकों को गंदा करना, पन्ने फाड़ना नहीं चाहिए। अच्छी पुस्तकें सच्चे मित्र के समान हमारे जीवन भर काम आती है। ये सबै गुरु की तरह ज्ञान और मोक्ष दायक भी हैं।

PREPARED BY

- ***R. TULASI PRADEEP*** ✍
- ***SA HINDI ZPHS RAYAKUDURU***
- ***RUPP WESTGODAVARI GENARAL SECRETARY***